नवबौद्ध बनना : नौटंकी या फैशन

दिल्ली सरकार के पूर्व मंत्री राजेंद्र पाल गौतम का नाम चर्चा में है। इनकी सभा का कुछ लोगों को नवबौद्ध बनाते हुए वीडियो वायरल हुआ है। जिसमें हिन्दू बहिष्कार की प्रतिज्ञा लेते कुछ लोग दिख रहे है। बुद्ध मत स्वीकार करने वाला 99.9 %दलित वर्ग बुद्ध मत को एक फैशन के रूप में स्वीकार करता हैं। उसे महात्मा बुद्ध कि शिक्षाओं और मान्यताओं से कुछ भी लेना देना नहीं होता। उलटे उसका आचरण उससे विपरीत ही रहता हैं।

उदाहरण के लिए
1. मान्यता- महात्मा बुद्ध प्राणी हिंसा के विरुद्ध थे एवं मांसाहार को वर्जित मानते थे।
समीक्षा- नवबौद्ध जाधवपुर, हैदराबाद यूनिवर्सिटी आदि में बीफ फेस्टिवल बनाने है। 99.9% नवबौद्ध मांसाहारी है। बुद्ध मत के देश दुनिया के सबसे बड़े मांसाहारी हैं। इसे कहते है “नाम बड़े दर्शन छोटे”

2. मान्यता- महात्मा बुद्ध अहिंसा के पुजारी थे। वो किसी भी प्रकार कि वैचारिक हिंसा के विरुद्ध थे।
समीक्षा- किसी भी नवबौद्ध से मिलो। वह झल्लाता हुआ मानसिक अवसाद से पीड़ित व्यक्ति जैसा दिखेगा। जो सारा दिन ब्राह्मणवाद और मनुवाद के नाम पर सभी का विरोध करता दिखेगा। वह उनका भी विरोध करता दिखेगा जो जातिवाद को नहीं मानते। हर अच्छी बात का विरोध करना उसकी दैनिक दिनचर्या का भाग होगा। महात्मा बुद्ध शारीरिक, मानसिक, वैचारिक सभी प्रकार की हिंसा के विरोधी थे। नवबौद्ध ठीक विपरीत व्यवहार करते हैं।

3. मान्यता- महात्मा बुद्ध संघ अर्थात संगठन की बात करते थे। समाज को संगठित करना उनका उद्देश्य था।
समीक्षा- नवबौद्ध अलगावावादी कश्मीरी नेताओं का समर्थन कर देश और समाज को तोड़ने की नौटंकी करते दिखते हैं।

4. मान्यता- महात्मा बुद्ध धर्म (धम्म) में विश्वास रखते थे।
समीक्षा- नवबौद्ध देश के विरुद्ध षड़यंत्र करने वाले याकूब मेनन जैसे अधर्मी के समर्थन में खड़े होकर अपने आपको ढोंगी सिद्ध करते हैं।

5. मान्यता- महात्मा बुद्ध छल- कपट करने वाले को छल-कपट छोड़ने की शिक्षा देते थे।
समीक्षा- भारत में ईसाई मिशनरी छल-कपट कर निर्धन हिन्दुओं का धर्मान्तरण करती हैं। नवबौद्ध उनका विरोध करने के स्थान पर उनका साथ देते दिखते हैं।

6. मान्यता- महात्मा बुद्ध अत्याचारी व्यक्ति को अत्याचार छोड़ने की प्रेरणा देते थे।
समीक्षा- 1200 वर्षों से भारत भूमि इस्लामिक आक्रमणकारियों के अत्याचार सहती रही। हज़ारों बुद्ध विहार से लेकर नालंदा विश्वविद्यालय इस्लामिक आक्रमणकारियों ने तहस-नहस कर दिए। नवबौद्ध उसी मानसिकता की पीठ थपथपाते दिखते हैं।

सन्देश- बनना भी है तो महात्मा बुद्ध की मान्यताओं को जीवन में , व्यवहार में और आचरण में उतारो। अन्यथा नवबौद्ध बनना तो केवल नौटंकी या फैशन जैसा हैं।